'AI के प्रभावस्वरूप सामाजिक विभाजन और सांस्कृतिक असमानता "

Narayan Lal, Research Scholar, Department of Geography, Mohanlal Sukhadiya University, Udaipur Rajasthan, E-mail ID: - omnarayanbarada1996@gmail.com

सारांश

वर्तमान तकनीकी युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को नए सिरे से परिभाषित करने का कार्य किया है। हालांकि AI ने विकास और प्रगति के कई नए अवसर उत्पन्न किए हैं, लेकिन इसके प्रभावों ने सामाजिक विभाजन और सांस्कृतिक असमानता को भी गहरा किया है। AI प्रणालियों, जैसे मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स, अक्सर बड़े पैमाने पर उपलब्ध डेटा पर आधारित होती हैं। यह डेटा पहले से मौजूद सामाजिक असमानताओं और सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को प्रतिबिंबित कर सकता है। उदाहरणस्वरूप, रोजगार चयन, शिक्षा प्रणाली, और स्वास्थ्य सेवाओं में AI के उपयोग से न केवल अवसरों में असमानता बढ़ती है, बल्कि वंचित समूहों के साथ भेदभाव भी होता है।

(कृत्रिम बुद्धिमत्ता) AI द्वारा सांस्कृतिक उत्पादों जैसे कि संगीत, कला, और साहित्य का स्वचालन स्थानीय सांस्कृतिक विविधताओं को अनदेखा कर सकता है। इससे प्रमुख सांस्कृतिक मानदंडों का वर्चस्व बढ़ता है, और हाशिए पर रहने वाली सांस्कृतिक पहचानों का ह्रास होता है।

(कृत्रिम बुद्धिमत्ता) AI का उपयोग विशेष रूप से उन क्षेत्रों में देखा गया है जहाँ स्वचालित निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ लागू की जाती हैं। उदाहरण के लिए, न्यायपालिका और पुलिस विभाग में AI आधारित निगरानी उपकरण अवसर नस्लीय और सामाजिक भेदभाव को मजबूत करते हैं। AI के उपयोग में पारदर्शिता, नैतिकता और समावेशिता को बढ़ावा देकर इन प्रभावों को कम किया जा सकता है। जिम्मेदार AI विकास, सामाजिक भागीदारी और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए, सामाजिक विभाजन और सांस्कृतिक असमानता को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकता है।